भिण्डी

भिण्डी फल वाली एक महत्वपूर्ण सब्जी है जो देश के लगभग सभी भागों में उगाया जाता है। भिण्डी का उपयोग मुख्य रुप से सब्जी के रुप में करते है। इसके अतिरक्त इसका उपयोग केनिग तथा फ्रोजन करके भी किया जाता है।

जलवायु :– इसकी सफल खेती के लिए 25 से 30 डिग्री सेन्टीग्रेट का तापमान उपयुक्त होता है। बीजों का जमाव 15 डिग्री तापमान होने पर फूल झडने लगते हैं।

औषधिय गुण :–भिण्डी में उच्च रेशे पाये जाने के कारण यह खून में सूगर की मात्रा को नियंत्रीत करता है।भिण्डी के रेशे उपयोगी जीवाणुओं प्रोवक्टेरिया के लिए अच्छा आहार है। जो ऑत के लिए फायदेमंद होता हैं।

उन्नत किस्में

पूसा मखमली

परमनी क्रान्ति

पंजरब पदमिनी

पी०–7

अर्का अनामिका

अर्का अभय

अर्का उपहार

आई. आई. वी. आर.–10

भूमि एवं भूमि की तैयारी

अच्छो जल निकास की मात्रा जीवांशयुक्त बुलुई दोमट अथवा दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है।मिट्टी का पी.एच. मान 6.0–7.0 के बीच होना चाहिए।

बीज की मात्रा तथा बुवाई का समय

गर्मी में बुवाई के लिए 10–15 किग्रा. प्रति हैक्टर बीज की आवश्यकत होती है।

बुवाई का ढंग

बीज के अच्छे जमाव के लिए बीज को 24 घंटे तक पानी में भिगोकर छाया में सुखाने के बाद वोना चाहिए। बुवाई से पूर्व बीज को थायरम नामक रसायन (2.0ग्राम/किग्रा. बीज) से शोधित करना चाहिए। बीज को 25–30 सेमी., गहराई पर बोते हैं। वर्षाकालीन फसल के लिए पौध व कतार से कतार की दुरी 45X30 या 60X30 सेमी. तथा ग्रीश्मकालीन फसल के लिए 30X20 या 45X30 सेमी. रखनी चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

200–250 कुन्तल सडी गोबर की खाद प्रति हैक्टर की दर से खेत की तैयारी के समय मिला देना चाहिए। इसके अतिरिक्त 100 किग्रा. नत्रजन, 50 किग्रा. फास्फोरस तथा 50 किग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर की दर से देना चाहिए। फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की एक तिहाई मात्रा अन्तिम जुताई के समय खेत में मिला देते हैं। नत्रजन की शेष मात्रा को बुवाई के 30 एवं 50 दिन बाद खडी फसल में टाप ड्रेसिंग के रुप में देना चाहिए।

सिंचाई

गर्मी में प्रत्येक 6–7 दिन पर तथा वर्षा ऋतु में वर्षा न होने पर सिंचाई करनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

रासायनिक खरपतवार नियंत्रण के लिए मेटाक्लोर 50 ई.सी. की 2 लीटर या स्टाम्प की 3.3 लीटर मात्रा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से बुवाई के 48 घण्टे के अन्दर छिड़काव करने से खरपतवार नष्ट हो जाते हैं।

तुड़ाई

भिण्डी की प्रथम बार फलियां बनने के प्रत्येक 2–3 दिन बाद फलियों की तुड़ाई करते हैं।

उपज

ग्रीष्मकालीन वर्षाकालीन फसल से प्रति हैक्टर क्रमशः 50 कुन्तल और 100 कुन्तल उपज मिल जाती है।

प्रमुख रोग व कीट

रोग

पीत शिरा मोजैक :– यह भिण्डी का सवसे भयंकर रोग है जो विषाणु द्वारा फैलता है। जिसका संचरण बेमिसिया टोबेकाई नामक सफेद मक्खी से होता है।रोगग्रस्त पौधों के पत्तियों की शिराए चमकीली व पीले रंग की हो जाती है। उततरी भारत में यह रोग वर्षा ऋतु में अधिक होता है।

रोकथाम

(1) रोग ग्रस्त पौधों का उखाड़ कर जला देना चाहिए।

(2) खेत के आस–पास सफाई रखना चाहिए।

(3) मेटासिस्टाक्स या मोनोकोटोफास 36 ई.सी. 1.5 कम.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तर पर तीन बार छिडकाव करना चाहिए।

कीट

फुदका (जैसिड) :– इस कीट के शिशु एवं प्रौढ़ दोनों पत्तियों एवं नरम भागों से रस चूसते हैं जिससे पत्तियां पीली पड़कर मुड जाती हैं। और झुलसी इुई दिखती हैं।

रोकथाम

1. बुवाई के समय खेत में 30 किग्रा. प्रति हैक्टर की दर से कार्बोफ्यूरान मिला दें।
2. बीज जमने के एक माह बाद मैलाथियोन 0.02 प्रतिशत का छिड़काव करना चाहिए।

तना एवं फल छेदक :– यह कीट पौधों की नयी शाखओं एवं ुलों में घुसकर नुकसान पहुचाते हैं। जिससे प्रभावित फल टेढे हो जाते हैं तथा खाने योग्य नहीं रह जाते हैं।

राकथाम :– रोग के नियंत्रण के लिए कारबेरिल (0.15 प्रतिशत) का 10 दिन के अंतराल पर इन्डो क्साकार्ब 15.8 प्रतिशत ई.एफ. का 250 मी./ है छिड़काव करना चाहिए।